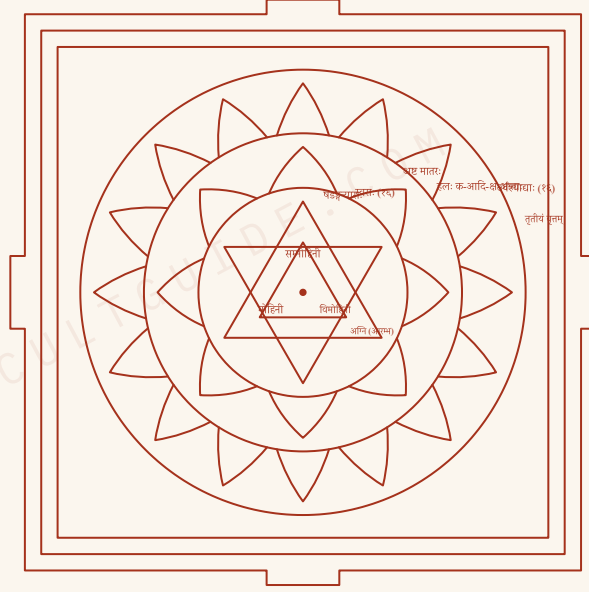


मन्त्रमहोदधिः



बिन्दु — कालरात्रि (कालिका) देवी का पूजन मध्य बिन्दु पर
 त्रिकोणे — सम्मोहिनी, मोहिनी, विमोहिनी, वामावर्त क्रम से
 षट्कोणे — षडङ्गमन्त्राः, आग्नेय (दक्षिण-पूर्व) कोण से आरम्भ
 प्रथम वृत्ते — षोडश स्वराः; अष्टदल कमले — अष्ट मातरः
 द्वितीय वृत्ते — क-आदि क्ष-अन्त हलः; षोडशदल कमले — उर्वशी आदि सोलह शक्तियाँ
 तृतीय वृत्ते — आवरण-पूजा आगे भी चलती है (श्लोक २१ के आगे)
 त्रिरेखाद्य भूपुरे, चतुर्द्वारे — बाह्यतम आवरण

कालरात्रिपूजायन्त्रम्

© OccultGuide.com · CC BY-SA 4.0

Kālarātri's worship-yantra, built from the centre outward: a triangle (Sammohini, Mohini and Vimohini, worshipped counter-clockwise); a hexagon (its six corners bearing the six limb-mantras, beginning at the fire corner); a circle of the sixteen vowels; an eight-petalled lotus of the eight Mother-goddesses; a further circle of the consonants from ka to kṣa; a sixteen-petalled lotus of Urvaśī and the other celestial nymphs; a third circle; and, outermost, a three-lined earth-square (bhūpura) furnished with four gates.

कालरात्रि का पूजा-यन्त्र, बीच से बाहर की ओर: त्रिकोण (सम्मोहिनी, मोहिनी, विमोहिनी, वामावर्त क्रम से पूजित); षट्कोण (छहों कोनों पर षडङ्ग-मन्त्र, आग्नेय कोण से आरम्भ); प्रथम वृत्त (सोलह स्वर); अष्टदल कमल (आठ मातृकाएँ); द्वितीय वृत्त (क से क्ष तक के व्यञ्जन); षोडशदल कमल (उर्वशी आदि सोलह/अस्तराएँ); तृतीय वृत्त, और सबसे बाह्य त्रिरेखाद्य भूपुर, द्वार द्वारों से युक्त
<https://occultguide.com/exposition-of-the-kalaratri-and-candi-mantras#fig-v13>